एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 11 (नवम्बर, 2026)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

हिमाचल प्रदेश के किन्नौर जिले में फल फसलों का क्षेत्रफल, उत्पादन और उत्पादकता

*अरुण कुमार, दुर्गा प्रसाद भंडारी, विशव गौरव सिंह चंदेल एवं दीपिका
वैज्ञानिक, क्षेत्रीय बागवानी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केंद्र, शारबो व कृषि विज्ञान केंद्र, किन्नौर, हिमाचल प्रदेश, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: arunkumar.negi@gmail.com

किन्नौर एक ट्रांस-हिमालयी जिला है जहाँ जलवायु में असामान्य विविधता है: निचार की अपेक्षाकृत नम और निचली घाटियाँ, कल्पा की मध्यम ढलानें और पूह का ठंडा रेगिस्तान, जहाँ सिंचाई का एकमात्र स्रोत ग्लेशियर का पिघला पानी है। पिछले कुछ दशकों में यह विविधता सिमटकर एक ही फसल, सेब, पर निर्भरता में बदल गई है। इस लेख में 2024-25 और 2025-26 के लिए किन्नौर में उगाई जाने वाली 15 फल फसलों के क्षेत्रफल, उत्पादन और उत्पादकता का अध्ययन किया गया है, जिला कुल में उनके हिस्से के अनुसार उन्हें क्रमबद्ध किया गया है, किन्नौर की तुलना हिमाचल प्रदेश के अन्य जिलों से की गई है, और परियोजना प्रस्ताव की सहायता से यह समझाया गया है कि इन आँकड़ों के पीछे क्या कारण हैं और विविधीकरण से कहाँ लाभ हो सकता है।



किन्नौर जिले के पूह विकास खंड के ढलानदार भू-भाग पर स्थापित सेब के बाग का मनोरम विहंगम दृश्य।

एक नज़र में किन्नौर

संकेतक	2024-25	2025-26	दो वर्ष का औसत	परिवर्तन
फलों के अंतर्गत क्षेत्रफल (हेक्टेयर)	12,656	12,658	12,657	0.0%
फल उत्पादन (मीट्रिक टन)	97,438	69,843	83,640.5	−28.3%
उत्पादकता (मीट्रिक टन/हेक्टेयर)	7.70	5.52	6.61	−28.3%
राज्य के फल क्षेत्रफल में हिस्सा (%)	5.33	5.42	5.38	
राज्य के फल उत्पादन में हिस्सा (%)	15.03	8.30	11.67	
12 जिलों में क्रम: क्षेत्रफल	7	7		
12 जिलों में क्रम: उत्पादन	3	3		
12 जिलों में क्रम: उत्पादकता	1	2		

किन्नौर में फलों के क्षेत्रफल में कोई बदलाव नहीं हुआ, परंतु उत्पादन 27,595 मीट्रिक टन घट गया, जिससे उत्पादकता 7.70 से घटकर 5.52 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रह गई। 2024-25 में किन्नौर की फल उत्पादकता प्रदेश के सभी जिलों में सबसे अधिक थी और राज्य औसत 2.73 मीट्रिक टन/हेक्टेयर से कहीं ऊपर थी। 2025-26 में यह शिमला (9.34 मीट्रिक टन/हेक्टेयर) के बाद दूसरे स्थान पर रही और राज्य औसत 3.60 मीट्रिक टन/हेक्टेयर से अब भी काफी ऊपर थी। किन्नौर के पास राज्य के फल क्षेत्रफल का केवल लगभग 5% है, फिर भी एक ही वर्ष में राज्य के फल उत्पादन में इसका हिस्सा 15.0% से घटकर 8.3% रह गया।

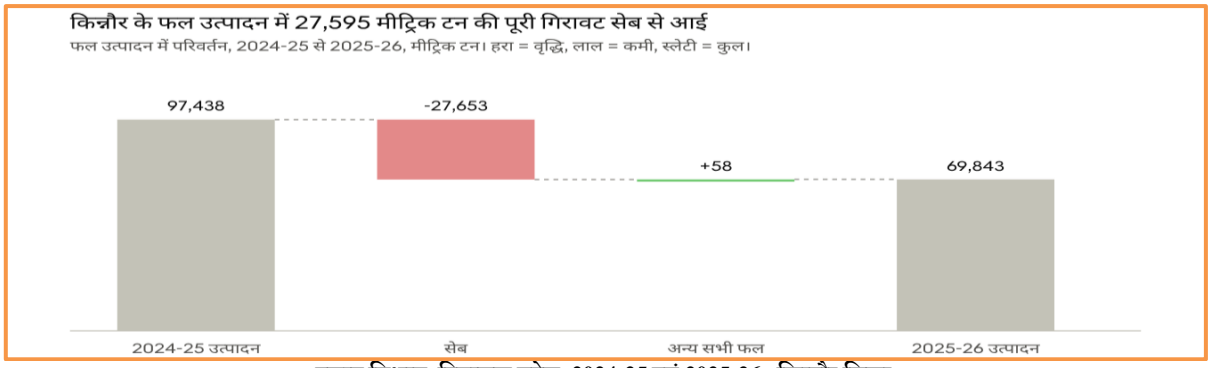

उद्यान विभाग, हिमाचल प्रदेश, 2024-25 एवं 2025-26 · किन्नौर जिला

फसलवार क्षेत्रफल में हिस्सा (अधिकतम से न्यूनतम)

फसलों को दो वर्ष के औसत के अनुसार क्रमबद्ध किया गया है। क्षेत्रफल हेक्टेयर में।

क्रम	फसल	2024-25	हिस्सा %	2025-26	हिस्सा %	दो वर्ष का औसत	औसत हिस्सा %
1	सेब	10,937	86.42	10,963	86.61	10,950.0	86.51
2	बादाम	932	7.36	932	7.36	932.0	7.36
3	खुबानी	324	2.56	323	2.55	323.5	2.56
4	अखरोट	219	1.73	198	1.56	208.5	1.65
5	नाशपाती	81	0.64	74	0.58	77.5	0.61
6	आड़ू	70	0.55	69	0.55	69.5	0.55
7	जापानी फल	23	0.18	36	0.28	29.5	0.23
8	अंगूर	25	0.20	23	0.18	24.0	0.19
9	चेरी	18	0.14	15	0.12	16.5	0.13
10	प्लम	14	0.11	13	0.10	13.5	0.11
11	कीवी	7	0.06	7	0.06	7.0	0.06
12	अनार	2	0.02	2	0.02	2.0	0.02
13	हेज़लनट	2	0.02	2	0.02	2.0	0.02
14	पीकन नट	1	0.01	1	0.01	1.0	0.01
15	अंजीर	1	0.01	0	0.00	0.5	0.00
	जिला कुल	12,656	100	12,658	100	12,657.0	100

सबसे अधिक क्षेत्रफल: सेब, जो जिले के फल क्षेत्रफल का 2024-25 में 86.4% और 2025-26 में 86.6% है। बादाम (7.4%) बहुत पीछे दूसरे स्थान पर है, उसके बाद खुबानी (2.6%) और अखरोट (1.7% से घटकर 1.6%) हैं। ये चारों फसलें मिलकर लगभग 98% क्षेत्रफल में हैं। अखरोट का क्षेत्रफल लगभग 10% घटा (219 से 198 हेक्टेयर), जबकि परसीमन का क्षेत्रफल लगभग 57% बढ़ा (23 से 36 हेक्टेयर), जो सेब के अलावा एकमात्र उल्लेखनीय विस्तार है। **सबसे कम क्षेत्रफल:** अंजीर (1 हेक्टेयर, 2025-26 में शून्य), पीकन नट (1 हेक्टेयर) तथा अनार और हेज़लनट (प्रत्येक 2 हेक्टेयर)।

फसलवार उत्पादन में हिस्सा (अधिकतम से न्यूनतम)

उत्पादन मीट्रिक टन में, दो वर्ष के औसत के अनुसार क्रमबद्ध।

क्रम	फसल	2024-25	हिस्सा %	2025-26	हिस्सा %	दो वर्ष का औसत	औसत हिस्सा %
1	सेब	96,636	99.18	68,983	98.77	82,809.5	99.01
2	खुबानी	367	0.38	365	0.52	366.0	0.44
3	बादाम	149	0.15	213	0.30	181.0	0.22
4	अखरोट	104	0.11	91	0.13	97.5	0.12
5	नाशपाती	90	0.09	82	0.12	86.0	0.10
6	अंगूर	65	0.07	79	0.11	72.0	0.09
7	परसीमन	8	0.01	10	0.01	9.0	0.01
8	आड़ू	8	0.01	7	0.01	7.5	0.01
9	प्लम	5	0.01	4	0.01	4.5	0.01
10	कीवी	3	0.00	5	0.01	4.0	0.00
11	चेरी	3	0.00	3	0.00	3.0	0.00
12	हेज़लनट	0	0.00	1	0.00	0.5	0.00
13	अनार	0	0.00	0	0.00	0.0	0.00
14	पीकन नट	0	0.00	0	0.00	0.0	0.00
15	अंजीर	0	0.00	0	0.00	0.0	0.00
	जिला कुल	97,438	100	69,843	100	83,640.5	100

सबसे अधिक उत्पादन: सेब, जो दोनों वर्षों में जिले के फल उत्पादन का क्रमशः 99.2% और 98.8% देता है। अकेले सेब का उत्पादन 27,653 मीट्रिक टन घटा (96,636 से 68,983 मीट्रिक टन, −28.6%)। अन्य सभी फलों का कुल उत्पादन 802 से बढ़कर 860 मीट्रिक टन (+7.2%) हो गया, यानी किन्नौर के उत्पादन में पूरी गिरावट सेब की गिरावट है। अन्य फसलों में केवल खुबानी, बादाम, अखरोट, नाशपाती और अंगूर का उत्पादन 50 मीट्रिक टन से अधिक है। बादाम का उत्पादन 43% (149 से 213 मीट्रिक टन) और अंगूर का 22% (65 से 79 मीट्रिक टन) बढ़ा, जबकि अखरोट और नाशपाती का घटा। परसीमन, कीवी, आलूबुखारा, आड़ू और चेरी में से प्रत्येक का उत्पादन 11 मीट्रिक टन से कम है, और अनार, पीकन नट तथा अंजीर का कोई उत्पादन दर्ज नहीं हुआ।

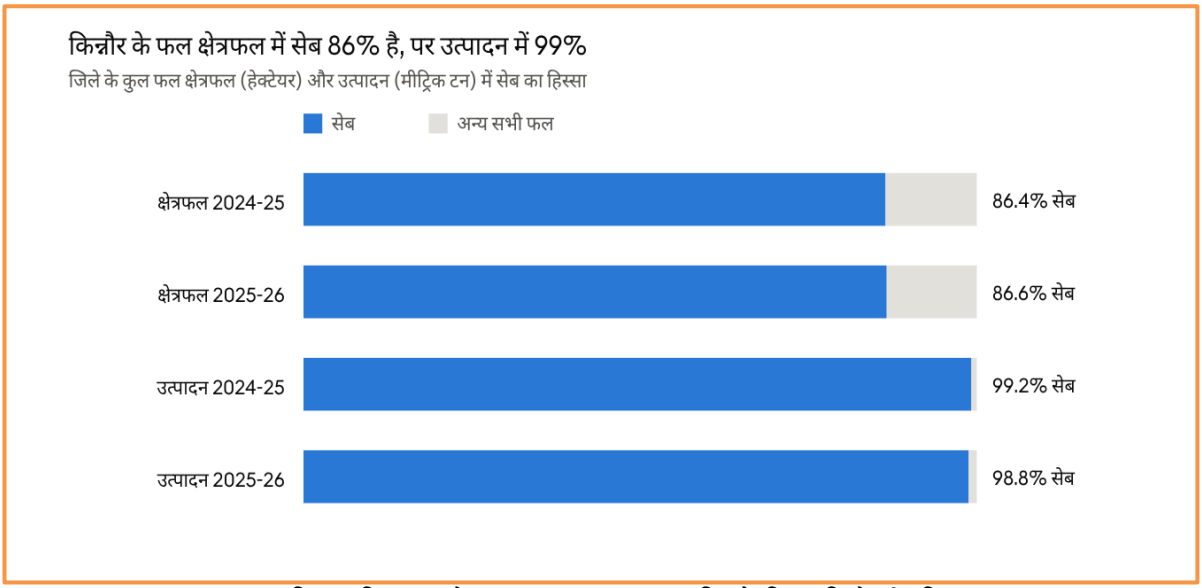

उद्यान विभाग, हिमाचल प्रदेश, 2024-25 एवं 2025-26 · किन्नौर जिला, हिस्से परिकलित

फसलवार उत्पादकता (अधिकतम से न्यूनतम)

उत्पादकता मीट्रिक टन/हेक्टेयर में, दोनों वर्षों की उत्पादकता के औसत के अनुसार क्रमबद्ध। डैश (–) का अर्थ है कि क्षेत्रफल दर्ज नहीं है।

क्रम	फसल	2024-25	2025-26	दो वर्ष का औसत
1	सेब	8.84	6.29	7.56
2	अंगूर	2.60	3.43	3.02
3	खुबानी	1.13	1.13	1.13
4	नाशपाती	1.11	1.11	1.11
5	कीवी	0.43	0.71	0.57
6	अखरोट	0.47	0.46	0.47
7	आलूबुखारा (प्लम)	0.36	0.31	0.33
8	परसीमन (जापानी फल)	0.35	0.28	0.31
9	हेज़लनट	0.00	0.50	0.25
10	बादाम	0.16	0.23	0.19
11	चेरी	0.17	0.20	0.18
12	आड़ू	0.11	0.10	0.11
13	अनार	0.00	0.00	0.00
14	पीकन नट	0.00	0.00	0.00
15	अंजीर	0.00	–	0.00
	जिला (सभी फल)	7.70	5.52	6.61

सबसे अधिक उत्पादकता: सेब (2024-25 में 8.84 और 2025-26 में 6.29 मीट्रिक टन/हेक्टेयर), उसके बहुत पीछे अंगूर (2.60 और 3.43 मीट्रिक टन/हेक्टेयर), खुबानी (1.13) और नाशपाती (1.11) हैं। सेब के अलावा अंगूर ही ऐसी फसल है जिसकी उत्पादकता स्पष्ट रूप से बढ़ी। बादाम 7.4% क्षेत्रफल घेरता है, पर उसकी उत्पादकता केवल 0.16 से 0.23 मीट्रिक टन/हेक्टेयर है, और अखरोट की उत्पादकता 0.5 से कम है। कीवी, परसीमन, हेज़लनट और अन्य छोटी फसलों का उत्पादन बहुत कम है, इसलिए उनकी उत्पादकता केवल संकेतात्मक है और उससे अधिक निष्कर्ष नहीं निकालने चाहिए।

राज्य की फल फसलों में किन्नौर का हिस्सा

कुछ फसलों के लिए किन्नौर राज्य के लिए उतना महत्वपूर्ण है जितना उसका राज्य के फल क्षेत्रफल में लगभग 5% हिस्सा दर्शाता है, उससे कहीं अधिक। अंगूर के अंतर्गत राज्य के क्षेत्रफल का 41-42% किन्नौर में है, और राज्य के अंगूर उत्पादन का 68% (2024-25) तथा 81% (2025-26) यहीं होता है। बादाम के राज्य क्षेत्रफल का 23-24% और बादाम उत्पादन का 14-17% तथा खुबानी के राज्य क्षेत्रफल का 10-12% (उत्पादन का 8%) किन्नौर में है। सेब में, किन्नौर के पास राज्य के सेब क्षेत्रफल का 9.4-9.5% है, परंतु राज्य के सेब उत्पादन में इसका हिस्सा 19.2% से घटकर 9.9% रह गया (नीचे चित्र देखें)।

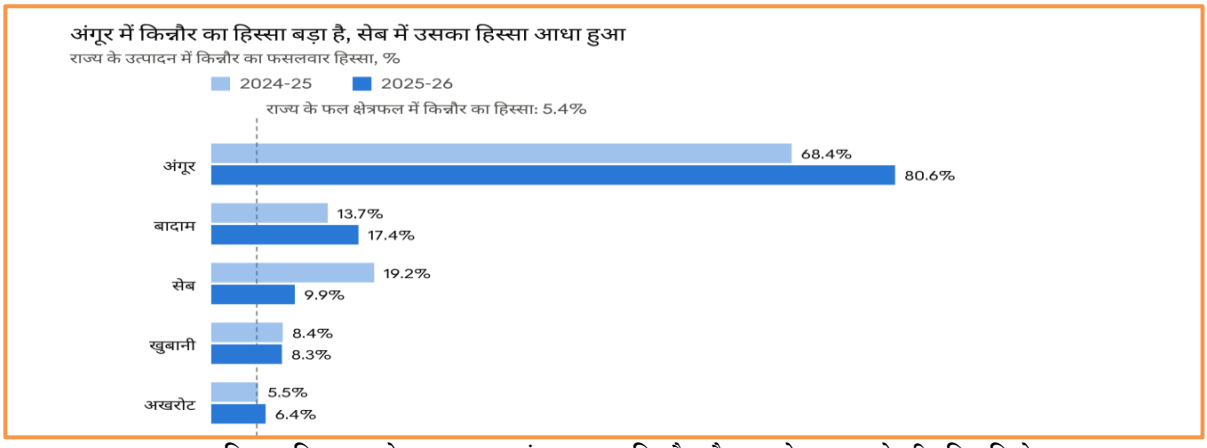

उद्यान विभाग, हिमाचल प्रदेश, 2024-25 एवं 2025-26 · किन्नौर और राज्य के उत्पादन से परिकलित हिस्से



सेब: वह फसल जो जिले के आँकड़े तय करती है

2024-25 में किन्नौर की सेब उत्पादकता 8.84 मीट्रिक टन/हेक्टेयर थी, जो प्रदेश में सबसे अधिक और राज्य के सेब औसत 4.32 मीट्रिक टन/हेक्टेयर से लगभग दोगुनी थी। 2025-26 में यह घटकर 6.29 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रह गई, जो शिमला (10.38 मीट्रिक टन/हेक्टेयर) के बाद दूसरे स्थान पर और राज्य के सेब औसत 6.09 मीट्रिक टन/हेक्टेयर से केवल थोड़ी ऊपर थी, क्योंकि शिमला, कुल्लू, मंडी और चंबा जैसे अधिकांश अन्य जिलों में सेब की उपज बढ़ी जबकि किन्नौर में घटी। सेब का क्षेत्रफल लगभग 10,940-10,960 हेक्टेयर पर स्थिर रहा, इसलिए यह परिवर्तन क्षेत्रफल का नहीं बल्कि उपज का है। प्रस्ताव में उल्लेख है कि हिमाचल प्रदेश में सेब की उत्पादकता वर्ष-दर-वर्ष बहुत घटती-बढ़ती रहती है (जिस अध्ययन का वह हवाला देता है, उसके अनुसार 53 वर्षों में विचरण गुणांक 47.2%) और इसे जलवायु तथा प्रबंधन कारकों से जोड़ा गया है। नीचे दिया चित्र मुख्य सेब उत्पादक जिलों की सेब उत्पादकता की तुलना करता है।

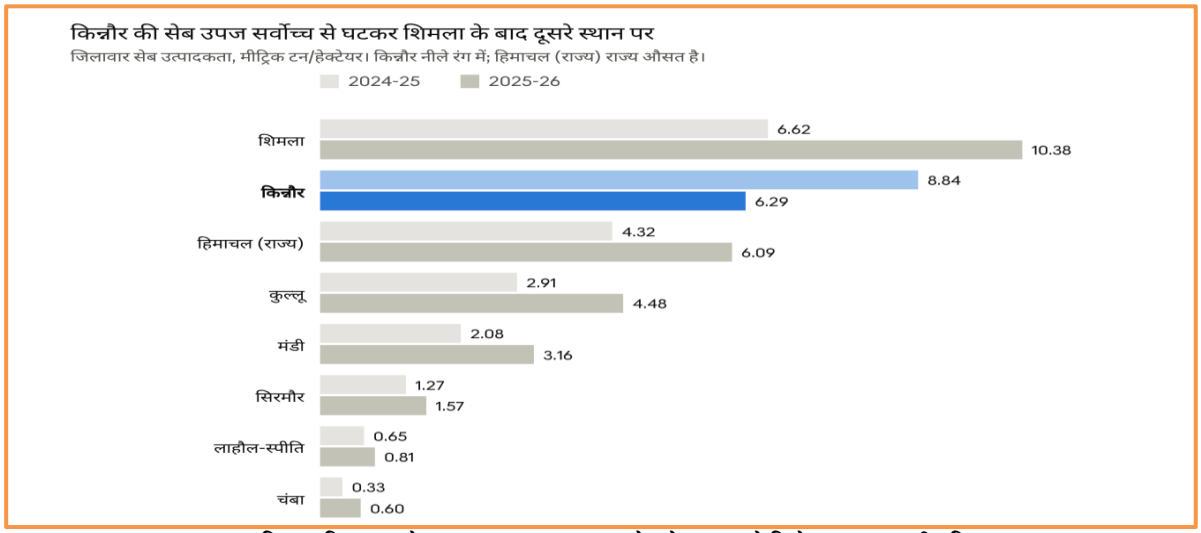

उद्यान विभाग, हिमाचल प्रदेश, 2024-25 एवं 2025-26 · सेब क्षेत्रफल वाले जिले; उत्पादकता परिकलित

जिले के भीतर, प्रस्ताव 2024-25 के लिए खंडवार सेब उत्पादकता बताता है:

खंड	सेब उत्पादकता 2024-25 (मीट्रिक टन/हेक्टेयर)	खंड की विशेषता
पूह	10.35	ठंडा रेगिस्तान; सिंचाई का एकमात्र स्रोत ग्लेशियर का पिघला पानी
कल्पा	8.51	मध्यम ढलानें; सबसे बड़ा सेब क्षेत्र; मध्यम ऊँचाई के कुछ क्षेत्रों में सेब अभी स्थापित हो रहा है
निचार	7.64	सबसे नम और सबसे निचला खंड; केवल यहीं फल देने वाले कीवी और परसीमन के बाग हैं

प्रस्ताव एक ही फसल पर इस निर्भरता से उत्पन्न जोखिमों की ओर भी ध्यान दिलाता है: बढ़ती लागत, सीज़न के चरम समय में बाज़ार का संतृप्त हो जाना और मौसम की अतियाँ। वह क्षेत्रीय अवलोकनों का हवाला देता है कि लगभग ₹60/किग्रा पर बिकने वाले सेब से उत्पादक को लागत और विपणन खर्च के बाद केवल लगभग ₹11/किग्रा का शुद्ध लाभ मिल सकता है; यह एक अनुमान है जिसे परियोजना मापे गए आँकड़ों से परखेगी। गर्म होती जलवायु सेब को ऐसे गाँवों की ओर भी ले जा रही है जहाँ पहले यह नहीं उगाया जाता था, जैसे रूपी घाटी, छोटा और बड़ा कंबा (निचार), रकछम, मस्तरंग और चितकुल (कल्पा) तथा कुनो चरंग, चुल्लिंग, हांगो, नाको, मल्लिंग और ताशीगंग (पूह), जहाँ के बाग अधिकतर अवैज्ञानिक ढंग से, बीजू मूलवृंत पर, खराब रोपण ज्यामिति और बहुत कम प्रशिक्षण के साथ लगाए गए हैं।



सेब तुड़ाई के मौसम में किन्नौर के बागों में सेब की फसल की तुड़ाई करते किसान।

अन्य फल फसलें और विविधीकरण की आवश्यकता

सेब के अलावा जिले में कुछ फसलों का उल्लेखनीय क्षेत्रफल है, परंतु आँकड़े दिखाते हैं कि उनका प्रदर्शन कमज़ोर है।

- **बादाम:** 932 हेक्टेयर (क्षेत्रफल का 7.4%), जबकि उपज 2024-25 में 0.16 और 2025-26 में 0.23 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रही। उत्पादन 43% बढ़ा, पर बहुत नीचे के आधार से।
- **खुबानी:** 324 हेक्टेयर, उपज 1.13 मीट्रिक टन/हेक्टेयर पर स्थिर और उत्पादन लगभग 365 मीट्रिक टन, जो सेब के बाद सबसे अधिक है।
- **अखरोट:** क्षेत्रफल 219 से घटकर 198 हेक्टेयर और उत्पादन 104 से घटकर 91 मीट्रिक टन रह गया।
- **अंगूर:** केवल 23-25 हेक्टेयर, पर सेब के बाद सबसे अच्छी उपज (2.60 और 3.43 मीट्रिक टन/हेक्टेयर) और राज्य के अंगूर उत्पादन का बहुत बड़ा भाग।
- **कीवी और परसीमन:** प्रस्ताव के अनुसार कीवी (6.71 हेक्टेयर) और परसीमन (22.74 हेक्टेयर) तीनों खंडों में लगाए गए हैं, पर 2024-25 में केवल निचार में उत्पादन दर्ज हुआ (2.97 मीट्रिक टन कीवी और 8.14 मीट्रिक टन परसीमन); कल्पा और पूह के पौधे अभी फल नहीं दे पाए थे। 2025-26 में जिले में परसीमन का क्षेत्रफल बढ़कर 36 हेक्टेयर हो गया, पर उत्पादन केवल 10 मीट्रिक टन रहा, और कीवी 7 हेक्टेयर पर 5 मीट्रिक टन उत्पादन के साथ स्थिर रही।

मुख्य निष्कर्ष

1. **किन्नौर में सेब का वर्चस्व है:** दोनों वर्षों के औसत में 86.5% फल क्षेत्रफल और 99% उत्पादन, और सभी फसलों में सबसे अधिक क्षेत्रफल, उत्पादन तथा उत्पादकता।

2. **क्षेत्रफल अपरिवर्तित रहने पर भी उत्पादन 28.3% घटा** (97,438 से 69,843 मीट्रिक टन) और उत्पादकता 7.70 से घटकर 5.52 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रह गई। यह गिरावट पूरी तरह सेब से आई (−27,653 मीट्रिक टन)।
3. **फल उत्पादकता में किन्नौर जिलों में पहले से दूसरे स्थान पर आ गया** और राज्य के उत्पादन में उसका हिस्सा 15.0% से घटकर 8.3% रह गया, हालाँकि क्षेत्रफल हिस्सा लगभग 5.4% बना रहा।
4. **सेब की उपज 8.84 से घटकर 6.29 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रह गई** (−29%), जबकि राज्य की सेब उपज 4.32 से बढ़कर 6.09 मीट्रिक टन/हेक्टेयर हो गई, इसलिए राज्य औसत पर किन्नौर की बढ़त लगभग समाप्त हो गई।
5. **सेब के अलावा अन्य फल छोटे और कम उपज वाले हैं, पर घट नहीं रहे:** उनका उत्पादन 802 से बढ़कर 860 मीट्रिक टन हुआ, जिसमें बादाम और अंगूर का योगदान रहा।
6. **राज्य में अंगूर और बादाम के लिए किन्नौर महत्वपूर्ण है:** राज्य के अंगूर क्षेत्रफल का 41% और बादाम उत्पादन का 14-17%।
7. **कीवी और परसीमन अभी शुरुआती अवस्था में हैं:** 7 हेक्टेयर और 23-36 हेक्टेयर, जिनमें उत्पादन केवल निचार में दर्ज हुआ; यह प्रस्ताव की स्थानीय परीक्षणों की माँग का समर्थन करता है।
8. **जिले के भीतर पूह में सेब उत्पादकता सबसे अधिक है** (2024-25 में 10.35 मीट्रिक टन/हेक्टेयर), उसके बाद कल्पा और निचार।

उपसंहार

2024-25 और 2025-26 के आँकड़े दिखाते हैं कि किन्नौर की फल अर्थव्यवस्था लगभग पूरी तरह सेब पर टिकी है, जो फल क्षेत्रफल का लगभग 86% घेरता है और लगभग 99% उत्पादन देता है। दोनों वर्षों में क्षेत्रफल समान रहा, इसलिए जिले के उत्पादन में 28% की गिरावट (97,438 से 69,843 मीट्रिक टन) सेब की उपज के 8.84 से 6.29 मीट्रिक टन/हेक्टेयर रह जाने से आई, ऐसे समय में जब कई अन्य जिलों में सेब की उपज बढ़ रही थी। एक ही वर्ष के इस उतार-चढ़ाव ने किन्नौर को उत्पादकता में पहले से दूसरे स्थान पर पहुँचा दिया और राज्य के फल उत्पादन में उसका हिस्सा लगभग आधा कर दिया, जो दर्शाता है कि जिला और उसके उत्पादक एक ही फसल तथा मौसम व प्रबंधन के उतार-चढ़ाव के प्रति कितने संवेदनशील हैं। अन्य फलों का उत्पादन कम है, पर वह घटा नहीं: बादाम, अंगूर और खुबानी जिले को सेब के परे एक आधार देते हैं, और कीवी तथा परसीमन अभी फल देना शुरू ही कर रहे हैं। बादाम का क्षेत्रफल बड़ा है पर उपज बहुत कम है और अखरोट का क्षेत्रफल घट रहा है, इसलिए बेहतर रोपण सामग्री, प्रशिक्षण और बाग देखभाल आवश्यक है। ANRF परियोजना के अंतर्गत प्रस्तावित क्षेत्रीय परीक्षण, जो जलवायु मापन, प्रदर्शन इकाइयों तथा मापी गई लागत और आय को जोड़ते हैं, यह जानने का उपयुक्त तरीका हैं कि कौन सी फसल किस खंड और ऊँचाई के अनुकूल है। चूँकि निष्कर्ष केवल दो वर्षों के आँकड़ों पर आधारित हैं, इसलिए उन्हें अधिक मौसमों के आँकड़ों से पुष्ट किया जाना चाहिए।